मंगल ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित मंगल ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय मंगलवार के दिन प्रातः काल से आरम्भ करना चाहिये। मंगल ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, दक्षिण दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या मंगलवार और रविवार को अवश्य करना चाहिये। मंगल ग्रह के मंत्र जप का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए मंगल ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी खदिर (खैर) या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ अग्निः मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथ्विव्या अयम्। अपा ग्वं रेता ग्वं सि जिन्वति।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ धरणीगर्भसंभूतं विद्युतकान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

ध्यान मंत्र

रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः।।

मंगल का गायत्री मंत्र

ऊँ अंगारकाय विद्महे

लोहितांगाय धीमहि।

तन्नोः भौमः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ हृं श्रीं भौमाय नमः।

ऊँ हूं श्रीं मंगलाय नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ अं अंगारकाय नमः।

श्री गोकुलेश शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से प्रातःकाल में करना चाहिये।